शहीद-ए-आज़म भगतसिंह की गौरवशाली....

पेज पांच का शेष

करते थे. नवम्बर 1927 को लला लाजपत राय के नाम खुले ख़त में लिखते हैं; "आपने कहा था कि ये तो बोल्शेविक हैं इसलिए अपना नेता लेनिन को मानते हैं. बोल्शेविक होना कोई गुनाह नहीं है और आज हिंदुस्तान को लेनिन की सबसे ज्यादा ज़रूरत है. क्या आपने उन नौजवानोंको सी.आई.डी. की 'मेहरबान' नज़रों में लाने का कमीना प्रयत्न किया...आपने लनगी मंडी में इन नौजवानों पर मात्र इसलिए कीचड़ उछाला क्योंकि उन्होंने जनता को वास्तविक स्थितियों से परिचित कराने का सहस दिखाया....हम आप पर निम्नलिखित आरोप लगाते हैं, राजनीतिक ढुलमुलपन, राष्ट्रीय शिक्षा के साथ विश्वासघात, स्वराज्य पार्टी के साथ विश्वासघात, हिन्दू-मुस्लिम तनाव को बढ़ाना और उदारवादी बन जाना." इसके बाद भी, जब 17 नवम्बर 1928 को, साइमन कमीशन का विरोध का नेतृत्व कर रहे लाला लाजपत राय की लाठीचार्ज में मृत्यु हो गई, तब उनकी मौत का बदला लिया जाएगा, ये विचार भगतसिंह की ओर से ही प्रमुखता से आए. 17 दिसम्बर 1928 को सांडर्स को गोली मारकर उन्होंने अपने वादे को पूरा कर के दिखाया. अगले दिन 18 दिसम्बर को 'हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातान्त्रिक सेना' की ओर से एक नोटिस ज़ारी हुआ. 'आज संसार ने देख लिया है कि हिंदुस्तान की जनता निष्प्राण नहीं हो गई है, उनका (नौजवानों का खून जम नहीं गया..अत्याचारी सरकार सावधान...हमें एक आदमी की हत्या करने का खेद है. परन्तु यह आदमी उस निर्दयी, नीच और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का अंग था जिसे समाप्त कर देना आवश्यक है. इस आदमी की हत्या हिंदुस्तान में ब्रिटिश शासन के कारिंदे के रूप में की गई है. यह सरकार संसार की सबसे अत्याचारी सरकार है. मनुष्य का रक्त बहाने का हमें खेद है. परन्तु क्रांति की वेदी पर कभी-कभी रक्त बहाना अनिवार्य हो जाता है. हमारा उद्देश्य ऐसी क्रांति से है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत कर देगी. इन्कलाब जिंदाबाद, ह.

बलराज सेनापति पंजाब हि.स.प्र.स. 18 दिसम्बर 1928.'हमें फांसी देने की बजाए गोली से उड़ाया जाए', शहादत से महज 3 दिन पहले 20 मार्च 1931 पंजाब के गवर्नर को लिखे पत्र में भगतसिंह अपने क्रांतिकारी विचारों के बारे में कोई भी संदेह नहीं रहने देते. हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है- चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूँजीपति और अंग्रेज या सर्वथा भारतीय ही हों, उन्होंने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। चाहे शुद्ध भारतीय पूँजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अंतर नही पड़ता. हो सकता है कि यह लड़ाई भिन्न-भिन्न दशाओं में भिन्न-भिन्न स्वरूप ग्रहण करे। किसी समय यह लड़ाई प्रकट रूप ले ले, कभी गुप्त दशा में चलती रहे, कभी भयानक रूप धारण कर ले, कभी किसान के स्तर पर युद्ध जारी रहे और कभी यह घटना इतनी भयानक हो जाए कि जीवन और मृत्यु की बाजी लग जाए। चाहे कोई भी परिस्थिति हो, इसका प्रभाव आप पर पड़ेगा। यह आप की इच्छा है कि आप जिस परिस्थिति को चाहे चुन लें, परन्तु यह लड़ाई जारी रहेगी। इसमें छोटी -छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। बहुत सभव है कि यह युद्ध भयंकर स्वरूप ग्रहण कर ले। पर निश्चय ही यह उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि समाज का वर्तमान ढाँचा समाप्त नहीं हो जाता, प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन या क्रांति समाप्त नहीं हो जाती और मानवी सृष्टि में एक नवीन युग का सूत्रपात नही हो जाता. निकट भविष्य में अन्तिम युद्ध लड़ा जाएगा और यह युद्ध निर्णायक होगा। साम्राज्यवाद व पूँजीवाद कुछ दिनों के मेहमान हैं। यही वह लड़ाई है जिसमें हमने प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया है और हम अपने पर गर्व करते हैं कि इस युद्ध को न तो हमने प्रारम्भ ही किया है और न यह हमारे जीवन के साथ समाप्त ही होगा। हमारी सेवाएँ इतिहास के उस अध्याय में लिखी जाएंगी जिसको यतीन्द्रनाथ दास और भगवतीचरण के बलिदानों ने विशेष रूप में प्रकाशमान कर दिया है। इनके बलिदान महान हैं। जहाँ तक हमारे भाग्य का संबंध है, हम जोरदार शब्दों में आपसे यह कहना चाहते हैं कि आपने हमें फाँसी पर लटकाने का निर्णय कर लिया है। आप ऐसा करेंगे ही,आपके हाथों में शक्ति है और आपको अधिकार भी प्राप्त है। परन्तु इस प्रकार आप जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला सिद्धान्त ही अपना रहे हैं और आप उस पर कटिबद्ध हैं। हमारे अभियोग की सुनवाई इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि हमने कभी कोई प्रार्थना नहीं की और अब भी हम आपसे किसी प्रकार की दया की प्रार्थना नहीं करते। हम आप से केवल यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि आपकी सरकार के ही एक न्यायालय के निर्णय के अनुसार हमारे विरुद्ध युद्ध जारी रखने का अभियोग है। इस स्थिति में हम युद्धबंदी हैं, अतः इस आधार पर हम आपसे माँग करते हैं कि हमारे प्रति युद्धबन्दियों-जैसा ही व्यवहार किया जाए और हमें फाँसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए। अब यह सिद्ध करना आप का काम है कि आपको उस निर्णय में विश्वास है जो आपकी सरकार के न्यायालय ने किया है। आप अपने कार्य द्वारा इस बात का प्रमाण दीजिए। हम विनयपूर्वक आप से प्रार्थना करते हैं कि आप अपने सेना-विभाग को आदेश दे दें कि हमें गोली से उड़ाने के लिए एक सैनिक टोली भेज दी जाए।

भवदीय, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव

गौरवशाली क्रांतिकारी विरासत को बुलंद रखना हमारी ज़िम्मेदारी है

वर्ग विभाजित समाज में कोई भी दल, मालिक और मज़दूर, दोनों वर्गों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता. जो राजनीतिक दल, अपने राजनीतिक प्रोग्राम में क्रांतिकारी बदलाव का अजेंडा नहीं रखते, वे सब, प्रत्यक्ष रूप से मालिक वर्ग के ही, किसी एक हिस्से और अप्रत्यक्ष रूप से यथास्थिति, मतलब पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के ही पोषक होते हैं. भगतसिंह के विचार मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बताए रास्ते से वैज्ञानिक समाजवाद प्रस्थापित करने वाले थे. यद्यपि उनके पास वक़्त बहुत कम था.

साम्राज्यवादी, औपनिवेशिक लुटेरे खूनी तंत्र ने, उस फूल को खिलने-महकने से पहले ही कुचल डाला. फिर भी भगतसिंह ने, जो वक़्त भी उनके पास था, उसका अधिकतम उपयोग करते हुए, अपने विचारों के बारे में कोई संशय, संदेह नहीं छोड़ा. भगतसिंह का किरदार ज़बरदस्त प्रेरणादायक है. वे हर मेहनतक़श हिन्दुस्तानी के दिल में बसते हैं. वे मज़दूरों, किसानों और नौजवानों के सच्चे हीरो हैं. यही वज़ह है कि हर बुर्जुआ राजनीतिक पार्टी, दिखावे के लिए स्टेज पर उनकी फोटो ज़रूर रखती है, लेकिन अन्दर से उनके विचारों से घबराती है. ये विडम्बना अलग- अलग तरह उजागर होती रहती है. भाजपा-संघ द्वारा फरीदाबाद के भगतसिंह चौक के जीर्णोद्धार के बहाने, भगतसिंह की मूर्ति को हटा दिया जाना, उसे 'विभाजन विभीषिका' बना दिया जाना और उसके ऊपर विचित्र प्रकार की मूर्तियाँ प्रस्थापित कर, उन्हें दबी-जुबान भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव की मूर्तियाँ बताना, भगतसिंह के विचारों की जड़ों पर वार करने का एक शर्मनाक पैंतरा है. संगरूर का अकाली संसद सदस्य सिमरनजीत सिंह मान, भगतसिंह को आतंकवादी बताकर अपनी और अकाली दल की असलियत उजागर कर ही चुका है. अभी हाल में, आम आदमी पार्टी, देश के कॉर्पोरेट लुटेरों के सामने खुद को एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करने की कवायद में, नया स्वांग रचते हुए, हर सरकारी दफ्तर में पीली पगड़ी पहने, भगतसिंह की तस्वीरें लटकाती जा रही है. ये भी एक पाखंड है. इस पार्टी ने हजारों आन्दोलनकारी आंगनवाड़ी महिलाओं को आन्दोलन करने की सज़ा देते हुए, उन्हें बर्खाश्त किया हुआ है. मध्यम वर्ग को पटाने के लिए, भले ढोल बजाकर कुछ लौलीपॉप दिए हों लेकिन हनुमान हुड़दंग, सार्वजनिक तौर पर पूजा-आरती पाखंड आदि मामलों में ये लोग फासिस्ट भाजपा से ज्यादा अलग नहीं हैं. कोई भी गैर-क्रांतिकारी पार्टी भगतसिंह के विचारों को बरदाश्त कर ही नहीं सकती. जो ऐसा दिखावा कर रही है, वह उसकी धूर्तता है, पाखंड है.

फिलहाल, फरीदाबाद के लोगों ने हरियाणा तथा देश के लोगों के साथ मिलकर, हरियाणा सरकार द्वारा भगतसिंह के विचारों की जड़ पर किए हमले को नाकाम करना है, उसके लिए सडकों पर उतरना है. 28 सितम्बर को, भगतसिंह के 115 वें जन्म दिन को शानदार तरह से मनाना है. दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन के नतीजे में करोड़ों लोगों द्वारा झेले गए बे-इन्तेहा कष्टों का दर्द हम महसूस करते हैं. पूरी शिद्दत से पीड़ितों के साथ हैं. 'विस्थापन विभीषिका स्मारक' ज़रूर बनाइये लेकिन उससे शहीद-ए-आज़म भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को मत जोड़िये. सारी स्थिति स्पष्ट कीजिए. स्मारक पर पट्टियाँ लगाइए लेकिन इन अमर क्रांतिकारी शहीदों की याद में किसी प्रमुख जगह पर, जैसे सेक्टर 12 में पड़ी सरकारी ज़मीन पर एक शानदार शहीद पार्क बनाइये, वहाँ तीनों अमर सपूतों की सम्मानजनक मूर्तियां प्रस्थापित कीजिए, जहाँ बैठकर लोग भगतसिंह के क्रांतिकारी विचारों पर चर्चा-डिबेट कर सकें, उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट कर सकें. ऐसा शहीद स्मारक फरीदाबाद में बने, ये सुनिश्चित करना हर उस व्यक्ति का कर्तव्य है, जो खुद को भगतसिंह के क्रांतिकारी विचारों का अनुयायी होने का दावा करता है. साथ ही सबसे अहम है, भगतसिंह के क्रांतिकारी विचारों को जन-जन तक पहुँचाना।

भाषा में भी छुआछूत

प्रो. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, भाषा वैज्ञानिक

अंग्रेजी में शब्द दस हजार हैं और आज साढ़े सात लाख पहुंच गए हैं, यानी कि सात लाख चालीस हजार शब्द बाहर से आए. इसका पता हम लोगों को नहीं है. जैसे अलमिरा को हम लोग मान लेते हैं कि ये अंग्रेजी भाषा का शब्द है, लेकिन वह पुर्तगाली भाषा का शब्द है.

इसी तरह रिक्शॉ को हम मान लेते हैं कि अंग्रेजी का है, लेकिन वह जापानी भाषा का है. चॉकलेट को हम मान लेते हैं कि ये अंग्रेजी भाषा का शब्द है, लेकिन वह मैक्सिकन भाषा का है. बीफ को मान लेते हैं कि अंग्रेजी का है, लेकिन वह फ्रेंच भाषा का है. अंग्रेजी ने बहुत सी भाषाओं के शब्दों को लेकर अंग्रेजी से अपने को समृद्ध किया और संसार की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक है.

अब हिंदी को लीजिए. हिंदी की जो पहली डिक्शनरी है उसकी शब्द संख्या थी बीस हजार. अंग्रेजी का सीधा दो गुना. ये आई थी 1800 ईस्वी के कुछ बाद. पहली डिक्शनरी मानी जाती है पादरी आदम की और दूसरी श्रीधर की.

आज हिंदी डिक्शनरी में शब्दों की संख्या क्या है? डेढ़ लाख से दो लाख अधिकतम. शब्दों की संख्या नहीं बढ़ रही है हिंदी में. इसके कारण हैं. हम लोग उतने उदार नहीं हैं. हमारी भाषा में वही छुआछूत की बीमारी है जो हमारे समाज में है.

लोक बोलियों के शब्दों को हम लेते नहीं हैं. कह देते हैं कि ये गंवारू शब्द हैं. कोई बोल देगा कि तुमको लौकता नहीं है? तो कहेंगे कि कैसा प्रोफेसर है! कहता है तुमको लौकता नहीं है. इसी लौकना शब्द से कितना बढ़िया शब्द चलता है हिंदी में, परिमार्जित हिंदी में, छायावादी कवियों ने प्रयोग किया-अवलोकन, विलोकन. उसमें लौकना ही तो है.

कितनी मर्यादा और उंचाई है इन शब्दों में. उसी को आम आदमी बोल देता है कि तुमको लौकता नहीं है? लौकना और देखना में सूक्ष्म अंतर है. भोजपुरी क्षेत्र में महिलाएं कहती हैं कि हमारे सिर में ढील (जुआं) हेर दीजिए. वे देखना शब्द का प्रयोग नहीं कर रही हैं. काले बाल में काला ढील आसानी से दिखाई नहीं देता, इसलिए वे कहतीं हैं कि ढील हेर दीजिए. कितना तकनीकी शब्द का इस्तेमाल है यह. मतलब गौर से देखिएगा तब वह छोटा-सा ढील दिखाई देखा.

इस तरह आप देखिए कि लोक बोलियों के शब्दों को लेने से हम लोग परहेज कर रहे हैं. विदेशी भाषा के शब्द लेने से आपकी भाषा का धर्म भ्रष्ट हो रहा है. क्रिकेट का हिंदी बताओ, बैंक का हिंदी बताओ, टिकट की हिंदी बताओ. टिकट का हिंदी खोजते-खोजते गाड़ी ही छूट जाएगी. यह छुआछूत का देश है.

इसीलिए हम विदेशी शब्द नहीं लेते कि यह तो विदेशी नस्ल का शब्द है, इसे कैसे लेंगे? यही कारण है कि हिंदी का विकास नहीं हो रहा है. अंग्रेजी बढ़ रही है लेकन हिंदी का विकास वैसा नहीं हो रहा है. हिंदी को छुआछूत की बीमारी है.

हिंदी में शब्दों की संख्या की कमी नहीं हैं. पहले हमारे यहां हिंदी की 18 बोलियां मानी जाती थीं. अब 49 मानी जाती हैं. हिंदी भारत के दस प्रांतों में बोली जाती है. इन दस प्रांतों की 49 बोलियों में बहुत ही समृद्ध शब्द भंडार है. हर चीज को व्यक्त करने के लिए शब्द हैं, लेकिन उसको अपनाने के लिए हम लोगों को परेशानी है.

हम भूसा शब्द का इस्तेमाल करते हैं. हिंदी शब्दकोश में भूसा मिलेगा, लेकिन पांवटा नहीं मिलेगा. जबकि भूसा और पांवटा में अंतर है. भूसा सिर्फ गेहूं का हो सकता है, लेकिन पांवटा धान का होता है. अवधी में इसे पैरा कहते हैं. दोनों एक ही चीज है. पांवटा पांव से है और पैरा पैर से.

दरअसल, हो क्या रहा है कि किसानों के शब्द हमारी डिक्शनरी में बहुत कम हैं. हमारे यहां राष्ट्र भाषा परिषद से दो खंडों में किसानों की शब्दावली छपी हुई है. उसमें कृषक समाज से जुड़े सभी शब्दों को शामिल किया गया है. लेकिन किसानों के शब्द, मजदूरों के शब्द, आम जनता के शब्द हमारी भाषा और शब्दकोश से आज भी गायब हैं. इसलिए गायब हैं कि हम मान लेते हैं कि ये ग्रामीण, गवांरू शब्द हैं.

हमारा देश धर्मप्रधान देश है. हमारी डिक्शनरी पर भी देवी देवताओं का वर्चस्व है. गाजियाबाद के एक अरविंद कुमार हैं, कोशकार हैं. उनपर खुशवंत सिंह ने एक टिप्पणी लिखी थी. उनकी एक डिक्शनरी है शब्देश्वरी. उसमें केवल शंकर भगवान के नामों की संख्या तीन हजार चार सौ ग्यारह है. विष्णु के एक हजार छह सौ छिहत्तर. काली के नौ सौ नाम हैं. दस देवी देवता दस हजार शब्दों पर कब्जा करके बैठे हुए हैं. लेकिन किसानों, मजदूरों और आम जनता के शब्द गायब हैं. ये आपको जोड़ना पड़ेगा.

कामकाजी स्त्री को मातृत्व की सामाजिक चुनौती

दीपशिखा सिंह

अपनी एक साल की बच्ची को जब डे केयर में छोड़कर मैं क्लास लेने जाती थी और बहुत दूर तक उसके रोने की आवाज आती रहती थी, ऐसे में एक-एक कदम उसे पीछे छोड़ते हुए लगता था कि मेरे अंतस के न जाने कितने टुकड़े हो रहे हैं। ऐसा लगता था जैसे कलेजे को देह से निकाले जा रही हूँ। वैसी मन:स्थिति में क्लास लेना मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती होती थी।

कामकाजी स्त्रियों के जीवन में रोजाना आने वाली इस तरह की चुनौतियों के प्रति संवेदनशीलता हमारे समाज से लेकर परिवारों तक लगभग नहीं है। मेरे सामाजिक-जीवन का दायरा अपेक्षाकृत बड़ा है बावजूद इसके मेरे जीवन में 4-5 गिनती के ऐसे लोग हैं जिन्होंने इस स्तर पर मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बल दिया है। किसी स्त्री के माँ बनने को लेकर अभी भी जो पितृसत्तात्मक अनुकूलन हमारे समाज में मौजूद है उसका हमें निरंतर सामना करना पड़ता है। किसी भी पुरुष सहकर्मी से किसी भी मायने में कमतर काम न करने के बावजूद यह बेहद आम धारणा निर्मित कर दी जाती है कि अरे! ये तो बच्चेवाली हैं, ये कहाँ काम कर पाती हैं। या बहुत थेथरई के साथ कहा जाता है कि आपका बच्चा है इसलिए हम आपसे बहुत कम काम ले रहे हैं। पहले तो स्त्रियों को घरों में कैद रखा गया, फिर अपने संघर्ष से पढ़-लिखकर स्त्रियाँ यहाँ तक पहुँची हैं तो उनकी ऐसी कंडीशनिंग कर दी जाए कि या तो वे स्त्री नहीं बल्कि पुरुष की रिप्रेजेंटेटिव बनकर काम करें या फिर कार्यस्थल पर परम्परागत दोयम दर्जे की नागरिक बनी रहें। और जब बात उससे आगे निकल जाए तो

उनके काम को कभी उनके मातृत्व तो कभी दूसरे बहाने से महत्त्व ही न दिया जाए या दबा दिया जाए।

साहित्यिक-अकादमिक जगत में यह मान लिया जाता है कि अब तो इनसे कुछ पढ़ाई-लिखाई होनी नहीं है बच्चा होने के बाद। कुछ बहुत करीबी दोस्तों का व्यवहार यूँ बदलता है कि अब इससे बात ही नहीं करनी है बाल-बच्चा होने के बाद सिर्फ अपनी परेशानियों के बारे में बात करेगी। व्यवहार परिवर्तन की यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। जब किसी स्त्री को और अधिक मानसिक सम्बल की जरूरत होती है ऐसे समय में हमारे समाज से हमें यह सब मिलता है। सवाल यह है कि जब माँ बनने की प्रक्रिया जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है फिर इस तरह का व्यवहार करके इसे बेहद अस्वाभाविक क्यों बना दिया जाता है कि कामकाजी स्त्रियाँ मातृत्व से डरने लगती हैं! मातृत्व की पूरी प्रक्रिया में एक स्त्री की बहुत सी ऊर्जा और कई सालों तक का लगभग पूरा समय खप जाता है खासतौर पर अकेले रहने वाली कामकाजी स्त्रियों का। लेकिन हम किसी स्त्री को इसके बाद कितना उसके कार्यक्षेत्र में वापस लाने में सहयोगी होते हैं, यह एक बड़ा मुद्दा है। भारत में बहुत कम शहरों या सरकारी कार्यस्थलों पर इस तरह का इंफ्रास्ट्रक्चर होता है जहाँ छोटे बच्चों की माँएं अपने बच्चों को निश्चिंत होकर कुछ समय के लिए छोड़ सकें। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी तमाम औरतें अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह बखूबी कर रही हैं और किसी भी पुरुष सहकर्मी के मुकाबले तिगुना काम कर रही होती हैं। लेकिन हर स्तर पर वह हमारे समाज के पितृसत्तात्मक सामाजिक- संरचना में मानसिक संत्रास झेलती हैं। सम्भवत: कभी किसी पुरुष को लंबे समय तक इस तरह के व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया से या पिता बनने के कारण परोक्ष रूप से परिवार से लेकर कार्यस्थल तक इस तरह के मानसिक संत्रास से नहीं गुजरना पड़ता होगा।